



# सुश्रुतसंहिता ।

श्रीधन्वन्तरिभगवता समुपादिष्टा तच्छि-  
ष्येण सुश्रुतेन विरचिता ।

सा च

आरोग्यमुवाकरसंपादकेन फरुखनगरनिवा-  
सिना पण्डितमुरलीधरशर्मणा राजवैद्येन  
सान्वय सटिप्पणीक-संपरिशिष्टया  
भाषाटीकया सम्भूषिता ।

तत्र

४-चिकित्सितस्थान ५ कल्पस्थानं च

टीकाकारेण पुन सशोधितं

तदिदं स्थानद्वयं

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

सुम्नरुषां

(चेतयादी७ वीं गली चम्पाटा लैन)

स्वकीये 'श्रीविद्वत्केश्वर' (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये  
द्वितीयावृत्तौ-मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

सन् १९६८, शके १८९३, सन् १९११

## प्रस्तावना ।

प्रायः जेसा अनुमानमे आता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि समस्त कार्योंका मूल केवल आरोग्य ही है इसके आरोग्य रहनेसे सपूर्ण कार्य ठीक होते हैं इसीलिये नीतिशास्त्रज्ञोंने भी कहा है कि—“आत्मान सततं रक्षे द्वावेगपि धनैरपि” और भगवान् धन्वन्तरिजीने तो इसकी रक्षाके अर्थ आयुर्वेद और अनेक प्रकारकी औषधियां निर्माण की हैं इसलिये आरोग्यकी मुख्य रक्षा क्या है कि आरोग्य होना, यह वैद्यविद्याके अर्थान है यद्यपि हम वैद्यक विषयके बृहत् ग्रन्थ अनेक हैं कि, जिनमें प्रत्येक रोगोंके निदान और रोगानुसार उपयोगी औषधियां तथा और २ उपाय कथन किये हैं तथापि महात्मा मृश्रुतजीकी रची हुई यह ‘सुश्रुतसंहिता’ सष ग्रंथोंमें बढकर है, क्योंकि जेसा कोई रोग नहीं कि जिसके दमनमें इसमें औषधियां नहीं कही हो और विचित्रता यह है कि, धनी व फगाल सबके योग्य औषधियां इसमें कही हैं, इसीलिये कहा है कि—“सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटे न च वाग्भटः । चरको नालोकिनो येन स वैद्यो यमर्षिकरः” ॥

इस ऐसे उत्तम ग्रन्थको सन्स्कृत भाषामें होनेके कारण सस्कृतभाषा नमिज सर्व समारी जीवोंको विप्रेल लाभ नहीं होताथा इसलिये विचार-रंग कर नयके सुलभाय इस ग्रन्थकी मनेतर व सर्वगुणतय भाषाटीका पद्धितर श्रीमृगलीधरजी राजवेश्वरद्वारा निर्माण पाय यह प्र भाषाटीकाविभूषित मुद्रित किया है ।

ग्रन्थाहुत्पना होनेमे इसके भिर भित् ४ भाग मुद्रित किये हैं जिनमेंसे यह तृतीय भाग है इनमें चिकित्सित और चन्प द्वा ग्था हैं जिनमेंसे चिकित्सितस्थानमें तो सपूर्ण प्रकारके रोगोंकी निश्चिन्ताये अनेक २ प्रकारमे धणित हैं और चन्पस्थानमें ये अनेक प्रकारसे सुंर चल्प कहें हैं कि जिनके कारणसे मनुष्य वृद्धताको त्यागकर पुन युवा होजाता है ।

मसारमें धिदिनगुणवाले अत्युत्तम इस ग्रन्थकी विगप प्रगंता नहीं करनयने क्योंकि सागररा चल कभी सागरमें समाता है ? इसलिये देगनेसे ही इसके गुण धिदिन होंगे, आशा है कि वैद्यविद्यारहित महाशय गीप्रही इस ग्रन्थको महणर विनापूयक इसके द्वारा औषध प्रयोग कर अनेकोंके लाभ उठा हमारे विश्वमें सयद कामे ।

विद्वत्पदमर्षि-  
-

सिंहराज श्रीकृष्णदास, सारदा "श्रीवेदशर" स्थित मुद्रण-प्रान्त-मुद्रण

# अथ सुश्रुतसंहिताचिकित्सितस्थान- विषयाऽनुक्रमणिका ।



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
<b>प्रथमोऽध्यायः १</b>		शोणितास्थापनविधि	८०३
द्विगुणीय चिकित्सितका व्याख्यान	७८९	निर्वापण	"
दो प्रकारके मण	"	उत्कारिकास्वेदन विधि	"
आगतुकग्रणर्म तारकालिक विधि	७९०	शोधन	८०४
मणमें दोषभेद	"	शोधिनीरसक्रिया	"
मणके सामान्य विशेष लक्षण	७९१	रोपण	८०५
वातादि भेदसे १५ प्रकारके मणलक्षण	"	मणधूपन	८०७
शुद्ध मणके लक्षण	७९३	उत्सादन	८०८
मणके ६० उपक्रम	"	अवसादन	"
उपक्रमोंके कार्य और कथन	७९५	मृदुकर्म	"
अपतपण विधि	७९६	दाहणकर्म	"
लेपन विधि	"	क्षारकर्म	८०९
परिषेक विधि	७९७	अमिकर्म	"
अभ्यंग "	"	कृष्णकर्म	"
स्वेदा "	"	पाण्डुकर्म	८१०
विम्लापन "	७९८	प्रतिस्मरण	८११
उपनाह "	"	रोमसजनन	"
पाचन तथा उत्कारिका विधि	"	रोमापहरण	"
रक्तस्रवण विधि	७९९	वस्ति और उत्तरवस्ति	८१२
खेहपा " "	"	यधन	"
ममन और विरेचा	"	पत्रदान	८१३
छेदन विधि	८००	कृमिनाशन	"
भेदन विधि	"	शृङ्गकर्म	८१४
दारण विधि	"	विपनाशन	"
लेहान विधि	८०१	शिरोविरेचन नस्य	"
एषण विधि	"	कन्तधारण	८१५
आहारण विधि	८०२	धूमपान	"
भ्यघा और स्रावण	"	गण्डुगर्पि	"
रोमा और सपानकी विधि	"	यज्ञकर्म	"
पीटन विधि	"	आहार	८१६
		रक्षाविधान	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शेषविप्रयोगविधि	८१७	उपेय और सिद्धि गोपय विधिमा	८१९
मार्गके उपपन्न	८१८	प्रत्यक्षमा की विधिमा	"
<b>द्वितीयोऽध्यायः २</b>		पादमा की विधिमा	८३७
मणविक्रितिक्रम व्याख्यान	८१८	कटिभ्रमका यन्त्र	"
सद्योन्मार्गके ६ प्रकार	८१९	पादभ्रमका यन्त्र	"
द्विप्रक्षरक्षणा	"	हस्ततल्लभका यन्त्र	८३८
मित्रके सक्षान	"	अन्तरभ्रमका यन्त्र	"
शोष्ठ और उनके भेदके सक्षान	८२०	प्रीत्यक्षि हस्तगदी हो तो यन्त्र	"
आमाशयादिगत रश्मिके सक्षान	"	तादृश और यन्त्रमा की विधिमा	८३९
विद्वन्क्षण	८२१	कपलभ्रमविधिमा	८४०
क्षतके सक्षान	"	अभिघातशेषविधिमा	"
विधितके सक्षान	"	अर्धभ्रमकी विधिमा	"
मृत्के सक्षान	"	संविभ्रमकी विधिमा	"
यन्त्र	"	वायुभ्रम और शिरा आदिके भागकी विधिमा	८४१
शोष्ठ कण्टकुरी विधिमा	८२३	मर्मभ्रममें उपयोगी मर्मपत्र	"
मणराज्य की	८२४	मर्मपत्रके गुण	८४२
<b>चतुर्थोऽध्यायः ४</b>		वातव्यापिधिविधिमा व्याख्यान	८४४
मित्रता विधिमा, निम्नले हुए मर्मोका विर	"	आमाशयगत वायुका यन्त्र	"
विद्वत्तना	"	पराजय और वरिष्ठता वायुका यन्त्र	"
उदरभ्रमकी विधिमा	८२५	धोमादिमे प्राप्त वायुका यन्त्र	"
शाल्यपुष्पके उपपन्न	८२६	वायुपिण्डित और वरिष्ठता वायुका यन्त्र	८४५
आमाशय और पञ्चाशत्यग्न रश्मिमे यन्त्र	"	शुक्रगत वायुका यन्त्र	"
मिमांसकस्य व्याख्यान	"	सर्वांग और एकांगगत वायुका यन्त्र	"
शोष्ठप्रवेशमा	८२७	वायुव्यापिमे भेदन और उपपन्न	८४६
शोष्ठीका व्याख्यान व्याख्यान करना	"	संवेदि अन्तरगत वायुकी विधिमा	८४७
अन्तरकोशविप्रक्षेप यन्त्र	८२८	वायुव्यापिमे यन्त्र	"
वायु भावेमे उपयोगी मर्मणादि तैल	८२९	मन्दविधन	"
संवेदिमा यन्त्र	८३०	अनुपयोगी विधि	८४८
हृष्टमर्गकी धेमा	"	हृष्टमर्ग का उपपन्नता की विधि	८४९
अन्तरमाशय व्याख्यानक हृष्टमर्गदि तैल	८३१	वायु आदि वायुगत यन्त्रमा की	८५०
<b>तृतीयोऽध्यायः ३</b>		<b>पञ्चमोऽध्यायः ५</b>	
अन्तरविधिमा व्याख्यान	८३३	वायुव्यापिधिविधिमा व्याख्यान	८५१
मर्मका कर्तव्यव्याख्यान	"	हृष्टमर्ग	८५२
आमाशय का अन्तर और पञ्च	८३४	हृष्टमर्ग	८५३
आमाशय कर्तव्य और अन्तर	"	हृष्टमर्ग	८५४
अन्तर अन्तर	"	वायुगत वायुगत उपपन्न	८५५
अन्तर वरिष्ठमर्ग	८३५	अन्तर वायुगत यन्त्र	८५६
अन्तर अन्तर मर्म	"	अन्तर अन्तर	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अथ योग	८५५	भिलावके विधान और सेवनकी विधि	८७८
कष्टप्रधान वानरकर्म धौपध	८५६	दूसरी विधि	८७९
दूसरा योग	८५७	तीसरी विधि	"
तीसरा योग	८५८	अशोमें भिलावों और कुडा आदिकी भेष्टना	८८०
चातरकर्म भोजन	८५९	अशो रोगोंपर पन्थापन्थ	"
चातरकर्म अन्य उपाय	"		
चातरकर्म कुपन्थ	८६०	<b>अथ सप्तमोऽध्यायः ७</b>	
अपतानकवायुचिकित्सा	"	अश्मरी ( पथरी ) चिकित्सितका व्याख्यान	८८१
अपतानकपर भद्रदावादि काथ	"	अश्मरीका रूप तथा लक्षण	"
पिप्पलीमूलादिपरिपेक	८६१	वाताश्मरीचिकित्सा	"
पक्षाघातकी चिकित्सा	८६२	पित्ताश्मरीचिकित्सा	८८२
मयास्तमकी चिकित्सा	८६३	कफाश्मरीचिकित्सा	"
अपतत्रवायुकी चिकित्सा	"	शकरा और पथरीनाशक यत्न	८८३
अर्दितवायुकी चिकित्सा	"	दूसरा यत्न	"
गुग्गुली आदि	८६४	तीसरा यत्न	८८४
कणशूलका यत्न	८६५	छेदकर पथरी निकालनेकी विधि	८८५
तूणी, प्रतूणीकी चिकित्सा	"	क्षीरशूलके दवायसे रक्त निशालनेकी विधि	८८७
आध्मान और प्रत्याध्मानका यत्न	"	रक्त निकालनपर लेप	"
अष्टीला, प्रत्यष्टीलाका यत्न	"	रक्त निशालनेपर दश दिन तककी विधि आदि	
ऊरुस्तमलक्षण	८६६	कावर्णन	८८८
ऊरुस्तमकी चिकित्सा	८६७	बीरा लगानेमें त्याज्य स्थान	८८९
ऊरुस्तममें मोजनानादि	"		
गुग्गुलुलक्ष	८६८	<b>अथाष्टमोऽध्यायः ८</b>	
गुग्गुलुसेवनविधि	"	भगदरचिकित्सितका व्याख्यान	८९०
		भगदरके भद्र	"
<b>अथ षष्ठोऽध्यायः ६</b>		भगदरकी कुन्मीका आद्य प्रयत्न	"
अश चिकित्सितका व्याख्यान	८६९	परी कुन्मीका यत्न	"
अशोपर क्षार लगानेकी विधि	८७०	शतपानककी चिकित्सा	८९१
भस्म आदि कौटनेकी विधि	"	शतपानकमें मण करलेका प्रकार	"
भस्मे आदिकी चिकित्सा	८७१	छेदनेके लक्षण	८९२
यत्र गगार क्षार अमि तथा शलकम करना	८७२	दय और प्रकृतिके अनुसार शतपानकका	
यत्रका प्रमाण	८७३	साध्यासाध्य	"
महोपर लेपकी औषध	"	उष्णपानचिकित्सा	८९३
अग्नौशक योग	८७४	परिगाढीकी चिकित्सा	८९४
अशकी चिकित्सा	८७५	शालकके भगदरका यत्न	"
पिप्पल्यादि क्षार	"	शम्यनिमित्त उन्माणीकी चिकित्सा	८९५
पात्रादि चूण अशोपर	८७६	शत्रुषेदनाकी क्षाति	"
पंचभूतानादि मन्त्राध अशोपर	"	सुरक्षेधि	"
पिप्पल्यादिपरि	"	भगदरको उपशान्त	८९६
पतननादि अशोके यत्न	८७८		"



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
प्रमेहर शालसारादि कषाय	९३०	उदररोगपर हितकारी अनेक उपचार	९४७
नवायस लोह	९३१	<b>अथ पचदशोऽध्यायः १५</b>	
लोह आसवकी विधि	"	मूटगर्भचिकित्सितका व्याख्यान	९४८
प्रमेहमुक्तके लक्षण	९३२	मूटगर्भकी कठिनता	"
<b>अथ त्रयोदशोऽध्यायः १३</b>		मूटगर्भ जीता निकालना चाहिये	९४९
मधुमेहचिकित्सितका व्याख्यान	९३३	मूटगर्भ निकालनेमें मात्र	"
मधुमेहकी चिकित्सा और शिलाजीतरी	"	गर्भसेधमें औषध	९५०
प्रधानता	"	गर्भसे जीवित वा मृत बालकके निकालनेकी	"
उत्तम शिलाजीतके लक्षण	९३४	विधि	"
शिलाजीतकी सेवनविधि	"	जीवित गर्भमें शस्त्रका निषेध	९५१
शिलाजीतके गुण	९३५	मृत गर्भका छेदन प्रकार	"
तापी नदीमें उपरम भुवन व रूप्य माक्षिका	"	स्त्रीकी रक्षा	"
उपयोग कई रोगोंपर शिलाजीतके सद्व्य	"	मृतगर्भमें बिलयका दोष	९५२
करनेका उपदेश	"	अपराके निकालनेका यत्न	"
तुलरक कषप	"	गर्भ निकालनेके उत्तर क्रिया	"
तुलरक कष साध्य करनेका मात्र	९३७	सूतिकाका उपचार पापलादि क्षाय पर रह	९५३
तुलरक कषका उपचार	"	उद्ग होनेपर चयेष्ट आहारादिकी धाना	९५४
दूसरा उपचार	"	बलातिल	"
तीसरा उपचार	"	बलातिलके गुण	९५५
<b>अथ चतुर्दशोऽध्यायः १४.</b>		बलादि क्षायकी विधि	"
उदरचिकित्सितका व्याख्यान	९३८	अतिबलादि तैल क्षाय आदि	९५६
उदररोगमें पथ्यापथ्य	९३९	<b>अथ पौडशोऽध्यायः १६</b>	
मासोदरचिकित्सा	"	पित्तधिके चिकित्सितका व्याख्यान	९५६
पित्तोदरचिकित्सा	"	मातृपित्तधिके आरम्भिक यत्न	"
कफोदरचिकित्सा	९४०	पचमूलादि क्षाय तैल आदि उपाय	"
सूयोदरका यत्न	"	पित्तविद्रधिना यत्न	"
सब उदररोगोंका मूत्रकारण	९४१	पित्तविद्रधिपर निशोष आदिका चूण, क्षाय,	"
उदररोगोंपर सामान्य प्रयोग	"	पूतका उपचार	९५८
उदररोगोंपर हरीतक्यादि पुन	९४२	करजाघपूत	"
पथ्यादिपूत	९४३	करजादि पूतके गुण	९५९
आगद्वर्ति	"	कफविद्रधिसा यत्न	"
पलवर्ति	९४४	रक्तविद्रधि और आगमुक्त विद्रधिसा यत्न	९६०
ग्रीवोदरमें फल खोलनेकी विधि	९४५	शन्तर्विद्रधिसा यत्न	"
परतन अनंतर अनेक उपचार	"	पित्तधिके पित्तधिके क्षाय उपचार	९६१
पटपलपट	९४६	गन्धके विद्रधिसा यत्न	९६२
पटपटपट यत्न	९४७	<b>अथ सप्तदशोऽध्यायः १७</b>	
पटपटपट क्षय देना	"	विषाग, गन्ध, स्तन रोगके चिकित्सितका	"
पटपटपट तीव्र पश्चात्पूरकी चिकित्सा	"	वद्विषाग	९६३



विषय	पृष्ठक	विषय	पृष्ठक
वातविषयका यन्त्र	१६३	परिचिन्तने चरमालाका यन्त्र भाग-१-१८६	
विन्निवृत्तका यन्त्र	१	मन्त्रागार	१८१
विषयपर गोष्ठादिहस्त	१६४	<b>अथैकोनविंशोऽध्यायः १९.</b>	
गोष्ठादि हस्तके गुण	१	हृदि, पित्त, श्मीर, विभिन्निका चरमाला	१८१
कनक विषयका यन्त्र	१६५	अग्न्यह्निने कनक दाहक विगार	१
विषयदी सानान्य दिव्या	१	वातक अग्न्यह्निना यन्त्र	१
नाडीयन्त्र ( नागुर ) की विभिन्नता	१	विगार का हृदि	१८६
वातगर्भाय	१	हस्तक अग्न्यह्नि	१
पैतृक नाडीयन्त्र	१६६	अपानक अग्न्यह्नि	१८५
श्लेष्मिक नाडीयन्त्र	१	मदोन अग्न्यह्नि	१
हृत्पुच्छिपुत्र नाडीयन्त्र	१६७	मूत्रक अग्न्यह्नि	१
हृत्पुच्छ, हृत्पुच्छ, हृत्पुच्छ के नाडीयन्त्र हेतुने यन्त्र	१६८	अपानक अग्न्यह्नि	१८६
हृत्पुच्छदिने हस्तमूत्रका यन्त्र	१	उपदेशविधिमा	१८७
यतिविद्यन	१	वातोपदेशविधिमा	१
नाडीयन्त्रके अन्य यन्त्र	१६९	पित्तागार	१
नाडीयन्त्रके विभिन्नतादि हेतु	१	कनकोपदेश	१८८
हस्तयोगविधिमा	१७०	परिचिन्तने विगार भाग-१-१८६	
हस्तयोगका उपाय हेतुने यन्त्रका यन्त्र	१७१	अपानके मन्त्रागार	१८७
हस्तयोगका पश्चिम भागविधि के मन्त्रागार	१	श्लेष्मिक भाग विधिमा	१८९
<b>अथाष्टादशोऽध्यायः १८</b>		वातगर्भाय	१
प्रधि, कनकी, हस्त, मन्त्रागारके विभिन्नता		विगार	१
हस्तका व्याख्या	१७२	हस्त गीत	१८३
प्रधिगतमे आधुनिक यन्त्र	१७३	अपानके अन्य यन्त्र	१
हस्तविधि विधिमा	१	अपानके भागदनी भादिमा हस्त, वात,	
विगार प्रधिमा यन्त्र	१	हेतुका उपदेश	१८३
अपानविधिमा यन्त्र	१७४	<b>अथ विंशतितमोऽध्यायः २०.</b>	
हस्तगर्भाय यन्त्र	१७५	हस्तगर्भाय विधिमा यन्त्र	१८४
हस्तगर्भाय विधिमा	१	अपानविधिमा यन्त्र	१
अपानविधिमा यन्त्र	१७६	अपानविधिमा यन्त्र	१
अपानविधिमा यन्त्र	१७७	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१७८	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१७९	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८०	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८१	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८२	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८३	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८४	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८५	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८६	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८७	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८८	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१८९	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९०	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९१	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९२	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९३	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९४	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९५	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९६	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९७	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९८	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	१९९	विगारविधिमा यन्त्र	१८५
अपानविधिमा यन्त्र	२००	विगारविधिमा यन्त्र	१८५

विषय	पृष्ठांक	विषय,	पृष्ठांक
यौवनपिठिका-पद्मिनी-कटक-चिकित्सा	"	तालुद्वेगोंकी चिकित्सा-गलशुशी	१०१३
पारिवर्तिका-अवपाटिका-चिकित्सा	१९९	तुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्धप्रकाशचिकित्सा	"	तालुपाक	"
सनिहृदयुद-वल्मीक-अमिरोहिणी-चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा-रोहिणी	"
वल्मीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठशाल्यकृतन	१०१५
वल्मीककी चौरना, क्षार लगाना और चमे	"	अभिजिह्वा और एकयुद	"
ह्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गलविद्रधि	"
अहिपूतनक-गुपणकच्छु-चिकित्सा	"	सर्वमुखगत वातजरोग	१०१६
गुदभ्रशका यत्न	१००२	पित्तज सर्वमुखरोग	"
<b>अथैकविंशोऽध्यायः २१</b>		कफज सर्वमुखरोग	"
द्व्यकुरोगचिकित्सितका व्याख्यान	१००३	मुखरोगमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पेपिका-अष्टौलिका-प्रथित-वि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सख्या	"
कुम्भीका-अलजी-मृदित-वि०	"	<b>अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३.</b>	
समूहपिठिका-अवमय-पुष्करिका-वि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्पर्शहानि-उत्तमा-शतपोनक-त्वक्पाक	"	सर्वांगशोथ	"
शोणितयुद-चिकित्सा	"	शोथका हेतु	"
शुद्धरोगमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोथके लक्षण	१०१९
<b>अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२</b>		विषज शोथ	"
मुखरोगके चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्यानभेदसे शोथकारक दोष	१०२०
वायुज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी कष्टसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोपकी वि०	१००६	शोथरोगमें पथ्य	"
कफके ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	वातजादिशोथोंकी चिकित्सा	१०२१
मेदोज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी सामान्य चिकित्सा	"
दन्तमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोथपर देवदारुआदि उपचार	१०२२
दन्तपुष्पुद और दन्तवेष्टकका यत्न	"	दूधरा जवाखारादि उपचार	"
शोथिरत्यन्त	"	शोथमें पथ्यापथ्य	१०२३
परिदर और उपकुशका यत्न	१००८	<b>अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४.</b>	
दन्तवैदर्गे और अधिदन्तका यत्न	"	अनागतपापाम्रतिपेयनीय ( विना आये हुए	
अभिमासका यत्न	१००९	रोगके रोजनेके यत्नावके ) चिकित्सितपा	
दन्तनाडीका विशेष यत्न	"	व्याख्या	१०२३
दन्तरोगचिकित्सा-दन्तद्वय-शर्करा	"	दिनपथा	१०२४
कापालिका	१०१०	परिशिष्ट	"
हृमिदन और हृमोश	१०११	मलोत्सर्गविधि	"
दन्तरोगमें पथ्य	"	मलादि वेग रोगमें दोष	१०२५
निहाके वातज और पित्तज कटक रोगका	"	दन्तवाटविधि	"
यत्न	१०१०	दन्तमें प्रचलन दृष्ट	"
कटक	"	दन्तके गुण	१०२६
उपभिक्षाका यत्न	"	दन्तपावनका विधि	"

विषय	पृष्ठंक	विषय	पृष्ठंक
वातविषयका यन्त्र	१६३	परिचितमे	१६३
विमविषयका यन्त्र	"	मन्त्राभ्युपग	१६३
विषयपर गोप्यादिष्टत	१६४	अथैकोनविंशोऽध्यायः १९	
गोप्यादि पृथके गुण	"	वृद्धि, उपरत, श्रीपद विधिमितका यन्त्रजन	१६३
कनन विषयका यन्त्र	१६५	अष्टशुद्धिने पञ्चन आहार विहार	१६३
विषयपक्षी सामान्य विद्या	"	वातत्र अष्टशुद्धि का यन्त्र	"
नाडीनग (नामूर) र्थ चिकित्सा	"	वित्त अष्टशुद्धि	१६४
पातनाटीयन	"	रक्त अष्टशुद्धि	"
पैतन नाडीनग	१६६	अध्मन अष्टशुद्धि	१६५
पैतन नाडीनग	"	मराज अष्टशुद्धि	"
शान्यशुद्धि नाडीनग	१६७	मूत्र अष्टशुद्धि	"
कृश, सुर्बल, उपरार्थके नाडीनग हीनमें यन्त्र	१६८	अध्मन अष्टशुद्धि	१६६
शुद्धशुद्धिमें शारमुद्रका यन्त्र	"	उपशुद्धिचिकित्सा	१६७
यतिचिकित्सा	"	वातशुद्धिचिकित्सा	"
नाडीनगके अन्य यन्त्र	१६९	पित्तशुद्धि	"
नाडीनगपर विपरीतादि र्थ	"	कफशुद्धि	१६८
हृत्प्रायेणनिकित्सा	१७०	परिचितमे विषय आतसकषी चिकित्सा	१७
हृत्प्रायेणन उन्मत्त होति यन्त्रस्थका यन्त्र	१७१	प्रकाशके मन्त्राभ्युपग	"
हृत्प्रायेणन परितुष्ट भावविधये मा युगा	"	श्रीपद र्थ चिकित्सा	१७१
अथाऽष्टादशोऽध्यायः १८.		वातशुद्धि	"
शोष, अशरी, शर्बुद, मरुतगणके चिकित्सा		वित्तशुद्धि	"
तथा यन्त्राणां	१७२	कफशुद्धि	१७२
मपिप्रेषमें आधुनिक यन्त्र	१७३	श्रीपदके अन्य यन्त्र	"
मन्त्राभ्युपग चिकित्सा	"	श्रीपदमें वातशुद्धि आदि का यन्त्र, म म,	
विषय प्रोक्षका यन्त्र	"	तथा उपचार	१७३
कननविषय यन्त्र	१७४	अथ त्रिंशत्तितमोऽध्यायः २०	
मैदाजम केर का यन्त्र	१७५	शुद्धिचिकित्सा मरुतगण यन्त्रजन	१७४
कननचिकित्सा	"	अर्जुनविषयचिकित्सा	"
अशरीपर मरुतगण	१७६	अंतागरी अदिशो चिकित्सा	"
शुद्धशुद्धि (हृत्प्रायेण) र्थ चिकित्सा	१७७	विपरीतादि र्थ का	"
कननशुद्धि	"	विषय मरुतगणके चिकित्सा	"
विपरीत	१७८	विपरीतादिचिकित्सा	"
कननशुद्धि	"	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत-विपरीत	१७९
शुद्धशुद्धि उपचार	१७९	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत	"
मरुतगण चिकित्सा	१८०	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत	"
कननशुद्धि	"	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत	"
कननशुद्धि	१८१	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत	"
कननशुद्धि	१८२	कननशुद्धि-कनन-विपरीत-विपरीत	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
यौवनपिडिका-पद्मिनी-कटक-चिकित्सा	"	तालुस्रोतोंकी चिकित्सा-गलशुडी	१०१३
परिवर्तिका-अवपाटिका-चिकित्सा	९९९	तुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्धप्रकाशचिकित्सा	"	तालुपाक	"
सनिरुद्धगुद-वल्मीक-अमिरोहिणी-चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा-रोहिणी	"
वल्मीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठसालुकेयत्न	१०१५
वल्मीकको चूरना, क्षार लगाना और चमे	"	अभिजिह्वा और एकद्वद	"
ह्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गर्लविद्रधि	"
अहिशूतनक-वृषणकच्छु-चिकित्सा	"	सर्वमुखगत वातजरोग	१०१६
गुदभ्रशका यत्न	१००२	पित्तज सधमुखरोग	"
<b>अथैकविंशोऽध्यायः २१</b>		कफज सर्वमुखरोग	"
श्वकरोगचिकित्सितका व्याख्यान	१००२	मुखरोगोंमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पिका-अष्टालिका-प्रथित-चि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सख्या	"
कुभीका-अलजी-मृदित-चि०	"	<b>अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३.</b>	
समुद्धपिडिका-अवमय-पुष्करिका-चि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्पर्शहानि-उत्तमा-शतपोनक-त्वक्पाक	"	सर्वांगशोथ	"
शोणितलुद-चिकित्सा	"	शोथका हेतु	"
शूकुरोगोंमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोथके लक्षण	१०१९
<b>अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२</b>		विषय शोथ	"
मुखरोगक चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्यानभेदसे शोषकारक दोष	१००
वायुज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी कष्टसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोपकी चि०	१००६	शोथरोगमें पथ्य	"
कफके ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	वातजादिशोथोंकी चिकित्सा	१०२१
मेदोज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी सामान्य चिकित्सा	"
दंतमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोथपर देवदारवादि उपचार	१०२२
दंतपुष्प और दंतवैष्टक्य यत्न	"	दूगरा जवाखारादि उपचार	"
शोथिरयत्न	"	शायमें पथ्यापरय	१०२३
परिदर और उपतुलाय यत्न	१००८	<b>अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४</b>	
दंतवैदम और अपिदतका यत्न	"	अनागतवायाप्रतिपथनीय ( विना भाये हुए	
अभिमांसका यत्न	१००९	रोगके रोकनेके यत्नापके ) चिकित्सितका	
दंतमार्दीका विशेष चरा	"	व्याख्यान	१०२३
दंतरोगचिकित्सा-दतहप-शर्करा	"	दिनचया	१०२४
कापालिका	१०१०	परिशिष्ट	"
हृमिदत और हनुमोक्ष	१०११	मन्त्रोत्पत्ति	"
दंतरोगमें पथ्य	"	मलादि वेग रोकनेमें दोष	१०२५
जिह्वाके वातज और विषाज कटक रोगका	"	दन्तवाटि	"
यत्न	१०१	दन्तमे प्रवृत्त रोग	"
कफकटक	"	दन्तमे रोग	१०२६
उपजिह्वाका यत्न	"	दन्तपापनका निरोध	"

विषय	पृष्ठक	विषय	पृष्ठक
पातविनयका यन्त्र	१६३	परिशिष्टमें व्याख्यातका यन्त्र भावप्रकाशके	
विनयविनयका यन्त्र	"	मन्त्रागुण	१६३
विनयविनय गोप्यादिद्वय	१६४	अथैकोनविंशोऽध्यायः १९	
गोप्यादि पृथके यन्त्र	"	वृद्धि, उपरस, शीतल विनियोगका व्याख्यान	१६३
कञ्ज विनयका यन्त्र	१६५	अष्टादशमें वर्णित व्याख्यान विनय	१६३
विनयविनयी सामान्य क्रिया	"	मानज अष्टादशका यन्त्र	"
गोपनीय ( नामूर ) की विनियोग	"	विनय अष्टादश	१६४
पातनाईयका	"	रक्तज अष्टादश	"
पेत्तिक नाडीयका	१६६	श्लेष्मज अष्टादश	१६५
श्लेष्मिक नाडीयका	"	मदज अष्टादश	"
श्लेष्मज नाडीयका	१६७	मूत्रज अष्टादश	"
कृश, दुर्बल, उल्लोकी नाडीयका होनेमें यन्त्र	१६८	अम्लज अष्टादश	१६६
अष्टादशमें व्याख्यानका यन्त्र	"	उपश्लेष्मिकविनय	१६७
वर्तिकायका	"	पातविनयविनय	"
नाडीयकाके अन्य यन्त्र	१६९	विनयविनय	"
नाडीयकाके विनियोगके तैल	"	कठोरपद	१६८
रक्तजोपश्लेष्मिक	१७०	परिशिष्टमें विनय व्याख्यातके विनियोग का	
रक्तजोपश्लेष्मिक उल्लोकी श्लेष्मिक का	१७१	प्रकाशके मन्त्रागुण	१७०
रक्तजोपश्लेष्मिक परश्लेष्मिक भाविधारे मन्त्र गुण	"	शीतल श्लेष्मिक	१७१
अथाष्टादशोऽध्यायः २०		वातजोपश्लेष्मिक	"
अथ, अथवा, अथु, अथुयके विनियोग		विनयविनय	"
तथा व्याख्यात	१७२	कठोरपद	१७२
परिशिष्टमें व्याख्यातका यन्त्र	१७३	शीतलके अन्य यन्त्र	"
कठोरपदिकी विनियोग	"	शीतलमें व्याख्यातकी व्याख्यात श्लेष्मिक, कथ,	
विनय अथवा यन्त्र	"	तैलका उपरस	१७३
कठोरपदिकी यन्त्र	१७४	अथ विंशतितमोऽध्यायः २०	
मैत्रीश्लेष्मिक का	"	शु पातविनियोगका व्याख्यान	१७४
गोपनीयविनय	"	अष्टादशविनियोग	"
अष्टादशका यन्त्र	१७५	अष्टादश अष्टादश विनियोग	"
अष्टादश ( गोपनी ) के विनियोग	१७६	विनयविनय	"
कठोरपद	"	विनय श्लेष्मिक विनियोग	१७५
विनयविनय	१७७	विनय श्लेष्मिक विनियोग	"
कठोरपद	"	कठोरपद-कठोरपद-विनय विनय विनय	१७६
कठोरपद उपरस	१७८	कठोरपद-कठोरपद-विनय	"
कठोरपदविनय	१७९	कठोरपद-कठोरपद-विनय	१७७
कठोरपदविनय	"	कठोरपद-कठोरपद-विनय	"
कठोरपदविनय	१८०	कठोरपद-कठोरपद-विनय	१८०
कठोरपदविनय	"	कठोरपद-कठोरपद-विनय	"
कठोरपदविनय	१८१	कठोरपद-कठोरपद-विनय	१८१
कठोरपदविनय	"	कठोरपद-कठोरपद-विनय	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
यौवनपिठिका-पद्मिनी-कटक-चिकित्सा	"	तालुरोगोंकी चिकित्सा-गलशुडी	१०१३
परिवर्त्तिका-अवपाटिका-चिकित्सा	९९९	बुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्ध प्रकाशचिकित्सा	"	ताउपाक	"
सनिरुद्धगुद-यल्मीक-अमिरोहिणी-चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा-रोहिणी	"
वरमीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठशालकयत्न	१०१५
बल्मीकको चीरना, क्षार लगाना और चमे		अधिशिङ्गा और एकबुद	"
स्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गलविद्रधि	"
भीष्टतनक-शृणक्कच्छु-चिकित्सा	"	सबमुखगन यातजरोग	१०१६
गुदभ्रशका यत्न	१००२	पित्तज सबमुखरोग	"
<b>अथैकाविंशोऽध्यायः २१</b>		कफज सर्वमुखरोग	"
शूक्ररोगचिकित्सितका व्याख्यान	१००२	मुखरोगमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पपिका-अष्टीलिका-प्रथित-चि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सत्या	"
कुभीका-अलजी-मृदित-चि०	"	<b>अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३</b>	
समूहपिठिका-अवमय-पुष्करिका-चि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्वशद्धानि-उत्तमा-शतपोनक-स्वक्साक	"	सर्वांगशोध	"
शोणितानुद-चिकित्सा	"	शोधवा हेतु	"
शूक्ररोगमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोषके रक्षण	१०१९
<b>अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२</b>		विपज शोष	"
मुखरोगक चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्थानभेदसे शोषकारक दोष	१०२०
वायुज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोषकी कटसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोपकी चि०	१००६	शोधरोगमें पथ्य	"
कफके ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	वातजादिशोषोंकी चिकित्सा	१०२१
मेदोज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोषकी सामान्य चिकित्सा	"
दंतमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोषपर देवदाबोदि उपचार	१०२२
दंतपुष्प और दंतवेष्टका यत्न	"	दूधरा जवाखारादि उपचार	"
शौथिरयत्न	"	शोथम पथ्यापथ्य	१०२३
परिदर और उपवृशका यत्न	१००८	<b>अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४</b>	
दंतवैदर्भ और अधिदंतका यत्न	"	अनागतबाधाप्रतिपेधनीय ( विना आये हुए	
अभिमांसाका यत्न	१००९	रोगके रोकनेके मरतावके ) चिकित्सितुम्	
दंतनाडीका विशेष यत्न	"	व्याख्यान	१०२३
दंतरोगचिकित्सा-दंतदृप-दंतेरा		दिनचया	१०२४
कापालिका	१०१०	परिदाष्ट	"
इमिदन और हनुमोक्ष	१०११	मलेत्सर्गविधि	"
दंतरोगों पथ्य	"	मलादि वेग रोकनेमें दोष	१०२५
जिराके घातज और पित्तज कटक रोगका		दन्काष्टविधि	"
यत्न	१०१२	दन्तनमें प्रशस्त दृष्ट	"
कफकटक	"	दन्तनके गुण	१०२६
उपशिङ्गाका यत्न	"	दन्तपावनका निषेध	"



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुंसकता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७९
पाँचवें प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
बाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
बाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पाचवाँ प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादाभ्यगसे स्तम्भन	१०६४	पचविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पथ्यापथ्य	"
अन्य बाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८५
बाजीकरणमें गुप्तफलादि कपाय	१०६५	सोमलताके रक्षण	१०८६
<b>अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७</b>		विशेष सोमके रक्षण	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		सोमकी उत्पत्तिके स्थान	१०८७
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		<b>अथ त्रिशत्तमोऽध्यायः ३०</b>	
व्याख्यान करते हैं	१०६६	निम्न सतापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
रसायन विधि का उपयोग	"	सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नहाना	"
साधारण रसायन योग	१०६७	करना चाहिये	"
विडगरसायन	"	रसायनकी औषधियाँ	"
विडगकी उत्कृष्ट विधि	"	अजगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
बलादिरसायनविधि	१०६९	अजगर्यादि औषधोंके स्वरूप	"
याराही कदका रसायन	१०७०	<b>अथैकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१</b>	
<b>अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८</b>		स्नेहोषधीगण चिकित्सितका व्याख्यान	१०९५
मेघायुष्कामीय रसायनका व्याख्या	१०७१	स्नेहके गुण	"
बाहुचीका प्रयोग	"	स्नेहक उत्पत्तिस्थान	"
शुष्क, पांडुरोग, उदररोग इनपरमी बाहुचीका	"	स्वावर स्नेहका उपदेग	"
प्रयोग प्रस्ताव है	"	नित्यकादि स्नेह	१०९६
गन्धकपर्णिक प्रयोग	१०७३	कज्जादि स्नेह	"
प्राग्जाके प्रयोग	१०७४	साठनारियलादि स्नेह	१०९७
प्राग्जाका दूसरा प्रयोग	"	कपाय, स्नेह, पाकके क्रमका उपदेग	"
मक्के प्रयोग	१०७५	मान ( तोल ) की परिमाणा	१०९८
अन्य प्रकीर्ण प्रयोग	१०७६	धननारिजाके मतों काय और स्नेहपाकविधि	"
पित्वादि काय	१०७७	तीन भौतिका स्नेहपाक	११००
कमलके नडका काय	"	स्नेहपाककी परीक्षा	"
गवादिवाय	"	स्नेहपानकी विधि	"
गवापरिणत	"	गन्धन और स्नेहपाकके योग्य रोगी	११०१
<b>अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९</b>		गन्ध और स्नेहके योग	"
स्वभावात्प्रतिप्रतिषेधनीय रसायनका रसायन	१०७८	गन्ध और स्नेहके योग	"
रसायन	१०७८	गन्ध और स्नेहके योग	"





विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुसकता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७९
पाचवें प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
वाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
वाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पांचवां प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादाभ्यगसे स्तन	१०६४	पचविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पथापध्व	"
अन्य वाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८५
वाजीकरणमें गुप्तफलादि कपाय	१०६५	सोमरुताके लक्षण	१०८६
<b>अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७</b>		विशेष सोमके वृक्षण	"
अथ सर्वापधानशामनीय रसायन तत्प्रका		सोमकी उत्पत्तिरेस्थान	१०८७
व्याख्यान करते हैं	१०६६	<b>अथ त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३०</b>	
रसायन विधिटा उपयोग	"	निवृत्त सतापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
साधारण रसायन योग	१०६७	सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नहीं	
विडगरसायन	"	करना चाहिये	"
विडगकी उत्कृष्ट विधि	"	रसायनकी औषधियां	"
बलादिरसायनविधि	१०६९	अजगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
बाराही कदका रसायन	१०७०	अजगरीदि औषधियोंके स्वरूप	"
<b>अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८</b>		<b>अथैकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१</b>	
मेधाशुष्कामीय रसायनका व्याख्यान	१०७१	स्नेहोपयोगिष चिकित्सितका व्याख्यान	१०९५
वायुनीका प्रयोग	"	स्नेहके गुण	"
कुष्ठ पांडुरोग, उदररोग अनपरीय वायुचीका	"	स्नेहक उत्पत्तिस्थान	"
प्रयोग प्रशस्त है	"	स्वप्न स्नेहका उपदेश	"
सूक्ष्मकर्णिके प्रयोग	१०७३	तिष्वकादि स्नेह	१०९६
प्राग्भाके प्रयोग	१०७४	करजादि स्नेह	"
प्राग्भाका दूसरे प्रयोग	"	ताटनारियलादि स्नेह	१०९७
पचके प्रयोग	१०७५	पपाय, स्नेह, पाचके क्रमका उपदेश	"
अन्य प्रकीर्ण प्रयोग	१०७६	मान ( ताल ) की परिभाषा	१०९८
वित्वादि काय	१०७७	घनानारजके मतमें काय और स्नेहका भेद	"
कमलके जट्टा काय	"	तान भेदिका स्नेहपाक	११००
कचादिशाप	"	स्नेहपक्व परीक्षा	"
शतावरणित	"	स्नेहपानकी विधि	"
<b>अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९</b>		घृतपन और तैलपनके योग्य रोगी	११०१
रसायनका प्रयोग		पाना आर मद्योद्रे म म्य	"
रसायन	१०७९	दोषोंक अनुहार स्नेहका	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
लिङ्गमच्छात्र	१०२७	गुरु, छात्रा आर शिष्यापदके गुण	१०४१
मुद्राप्रशान्त	"	वाग्गतेन शिक्षके गुण	"
नेत्राभ्यास	१०२८	परिचित ( विनिर्दिष्टिमे आचार्यके गुण )	"
शान्तनवा विषय	"	सद्वृत्ता आचार्य	१०४२
साधुगणन	"	कृत्वा चाना, करणे विद्या हुमा एतमे	"
परीक्षा-साधुगणनमे गुणावगुण	१०२९	हृत्वा, विना शान्तमे काना, गुण यथा,	"
साधुगणन विषय	"	वागी आदि कर्त सवादी करना इत्यादि	"
क्षिप्ते तैल समानके गुण	१०३०	प्राप्तकर्तरी करन न करना ..	"
कधी करण और कर्णधूलन	"	पणप्राप्तन स करना, श्रम, भाग, दक्षिणपत्र,	"
सोदायन और सेक तथा स्नेहावगाहन	"	जलाय आदि के लीन साधुगण	"
स्नेहाव्यगता विषय	१०३१	स्वगता निषिद्ध है शान्ति ..	१०४३
व्यायाम करनके गुण	१०३२	अति मुनश्च विषय ..	१०४४
विषय आश्रयानक श्रमाम करना	"	मुनिमे श्रमगके गुण ..	१०४५
बलादका श्रमण और अन्य विचार	१०३३	अथ पञ्चविंशतितमोऽध्यायः २५,	
अनि व्यायामके दोष	"	विनिर्दिष्टितता म्यस्यान ..	१०४६
श्रमामका विषय	१०३४	पणायीके श्रम ..	"
उपयुक्त लयानके गुण	"	परिचर ..	"
उत्तरण और उत्सादनके गुण	"	उपयुक्त ..	१०४७
श्रमण और श्रमण श्रमणके गुण	"	उपयुक्त और दुःखपदन	"
लानके गुण	१०३५	पणायी ..	"
उपयुक्त और विनिर्दिष्टित स्नान कथ	"	क-मालाश्री-विनिर्दिष्ट	१०४८
करना	"	हृत्वा विनिर्दिष्ट ..	"
स्नानका विषय	"	लीनवि विनिर्दिष्टा ..	"
समुत्पत्ते गुण	१०३६	वागी विनिर्दिष्ट ..	१०४९
परीक्षा	"	वागी विनिर्दिष्ट ..	"
गुरु, छात्र आर शिष्या भाग्य गुणन कथ	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५०
विनिर्दिष्ट स्नान कराना है	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५१
विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५२
श्रीगणेशाय नमः	१०३७	अथ पञ्चविंशतितमोऽध्यायः २६,	
पणायी विनिर्दिष्ट	"	श्रीगणेशाय नमः	"
पणायी विनिर्दिष्ट	१०३८	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५३
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५४
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५५
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५६
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५७
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५८
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०५९
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६०
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६१
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६२
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६३
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६४
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६५
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६६
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६७
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६८
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०६९
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७०
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७१
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७२
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७३
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७४
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७५
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७६
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७७
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७८
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०७९
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८०
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८१
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८२
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८३
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८४
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८५
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८६
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८७
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८८
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०८९
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९०
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९१
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९२
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९३
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९४
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९५
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९६
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९७
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९८
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	१०९९
पणायी विनिर्दिष्ट	"	पणायी विनिर्दिष्ट ..	११००

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुंसकता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७५
पौचवे प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
वाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
वाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पौचवो प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादान्धगमे स्तनन	१०६४	पञ्चविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पञ्चापथ्य	"
अन्य वाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८५
वाजीकरणमें गुप्तफलादि कथाय	१०६५	सोमरुताके लक्षण	१०८६
<b>अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७</b>		विशेष सोमके उद्घान	"
अथ सर्वाधिपानशामनीय रसायन तत्रका		सोमकी उत्पत्तिके स्थान	१०८७
व्याख्यान करते हैं	१०६६	<b>अथ त्रिशत्तमोऽध्यायः ३०</b>	
रसायन विधिको उपयोग	"	निश्चित सप्तापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
साधारण रसायन योग	१०६७	सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नहीं	"
विडगरसायन	"	करना चाहिये	"
विडगकी उत्कृष्ट विधि	"	रसायनकी औषधिका	"
मलादिरसायनविधि	१०६९	अजगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
मारही कदका रसायन	१०७०	अजगरीदि औषधियोंके स्वरूप	"
<b>अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८</b>		<b>अथैकविंशत्तमोऽध्यायः ३१</b>	
मेघाशुष्कानीय रसायनका व्याख्यान	१०७२	स्नेहोपयोगिक चिकित्सितका व्याख्यान . .	१०९५
वाउचीका प्रयोग	"	स्नेहके गुण	"
कुष्ठ, पांडुरोग, उदररोग इनपरभी वाउचीका	"	स्नेहके उत्पत्तिस्थान	"
प्रयोग प्रदास्त है	"	स्थावर स्नेहका उपदेश	"
मेढ्रकन के प्रयोग	१०७३	तिलकादि स्नेह	१०९६
प्राक्षीके प्रयोग	१०७४	करजादि स्नेह	"
प्राक्षीका दूसरा प्रयोग	"	ताडनारियलादि स्नेह	१०९७
वपके प्रयोग	१०७५	कपाय, स्नेह, पाकके क्रमका उपदेश	"
अन्य प्रकीर्ण प्रयोग	१०७६	मान ( तोल ) की परिभाषा	१०९८
शिलादि काय	१०७७	पल्लवगुर्जाके मतमें काय और स्नेहपाकविधि	"
कमलके पड्डा काय	"	तीन भाँतिका स्नेहपाक	११००
नचादिशाय	"	स्नेहपाककी परीक्षा	"
घृतापरिप्लव	"	स्नेहपानकी विधि	"
<b>अथैकविंशोऽध्यायः २९</b>		घृतपान और तैत्तपानके योग्य रोगी	११०१
स्वभावादिप्रतिनिधेनीय रसायनका व्या		गंगा और मन्नाके योग्य	"
खान	१०७९	दोषोंके अनुसार स्नेहपान	"



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
धमनके अधोगमनकी उपाधि	११३५	अयोगका लक्षण और यत्न	११६०
विरेचनका लक्ष्मण	११३६	आध्मानका लक्षण और यत्न	"
सावशेष औषधकी उपाधि	"	परिकर्तिका और परिस्त्रावके लक्षण तथा यत्न	११६१
औषध जीर्ण होने ( पचजाने ) के अवगुण	११३७	प्रवाहिका और हृदयोपसरणके लक्षण तथा	"
स्वल्पदोषहरण	"	यत्न	"
वातशूल	११३८	अगप्रहका लक्षण और यत्न	११६२
औषधका अयोग	"	अतियोग और जीवादान	"
अतियोगके उपद्रव	११४०	धमन विरेचन और वस्तिमें दिनोंका अंतर	११६३
जीवादान उपाधिका यत्न	११४२	<b>अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७.</b>	
रूपपित्त और जीवशोणितकी परीक्षा	"	अनुवासन वस्तिचिकित्सितका व्याख्यान	११६३
आध्मान	११४३	अनुवासनका समय और मात्रा	"
परिकर्तिका	"	वस्तियोग्य तैलोंका साधन	११६४
परिस्त्रावका लक्षण और यत्न	११४४	वस्तिधर्ममें शिक्षायोग्य बातें	११६५
प्रवाहिकाका " " "	"	रात्रिमें वस्तिक नियम	११७०
हृदयोपसरणका " " "	११४५	रात्रिमेंही वस्तिकी आशा	"
विषधका " " "	"	दिन और रात्रिमें वस्तिक नियम	"
<b>अथ पचत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३६.</b>		भोजनका नियम	११७१
नेत्रवस्तिप्रमाणप्रविभागचिकित्सितका व्याख्यान	११४६	न्यूनाधिक स्नेहवस्तिके दाप	११७३
वस्तिकर्मके योग्य रोगी	११४७	सम्यगनुवासितके लक्षण	"
नत्र ( नली ) और मात्रादिका प्रमाण	११४८	वस्तिकर्मके उत्तर किया	"
वस्ति का चित्र	११५०	वस्तिके अंतरका समय	११७५
वस्ति दो प्रकारकी होती है	११५१	स्नेहवस्तिनद्री व्यापद्	"
अनुवासन वस्ति का वर्णन	"	वातादि दोषोंसे अभिभूत स्नेहके उपद्रव	"
वस्तिकर्मके अयोग्य मनुष्य	११५२	अप्राभिभूत स्नेहके उपद्रव	११७६
वस्तिकर्ममें विशेषता	"	अगुद्धके मलमिश्रित स्नेहके उपद्रव	"
वस्तिकी व्यापत्तियां प्रणिधानदोष और	"	दूगनुष्ठत स्नेहके दोष	"
नेत्रदोष	११५४	प्रवाहण	११७७
पित्त और आपपीडनके दाप	"	मदानुसरण	"
इन्द्र और दायादे दोष	"	स्नेहका उत्पत्ति न आना	"
<b>अथ पट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३६.</b>		उत्तरवस्तिमें नेत्र और मात्राका प्रमाण	११७८
नेत्रवस्तिव्यापचिकित्सितका व्याख्यान	११५६	उत्तरवस्तिके योग्य वस्ति	११७९
नेत्रप्रणिधान दोषके लक्षण और यत्न	११५७	उत्तरवस्तिकर्मकी विधि	"
नेत्रदोषके लक्षण और यत्न	"	त्रिषोके उत्तरवस्ति देनेकी विधि	११८०
वस्तिदोषोंके लक्षण और यत्न	"	उत्तरवस्ति का स्नेह उत्पन्न न आये तो किया	"
पीडनदोषके लक्षण और यत्न	"	वर्णिषिधा	११८१
इन्द्र ( औषध ) के दोष	११५८	उत्तरवस्तिके गुण	११८२
दायादोषके लक्षण और यत्न	११५९	<b>अथाष्टात्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८</b>	
		निम्न उपक्रम चिकित्सितका व्याख्यान	११८३



॥ श्रीः ॥

# अथ सुश्रुतसंहिताकल्पस्थान- विषयाऽनुक्रमणिका ।



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
<b>अथ प्रथमोऽध्यायः १</b>		स्वावरविषके १० अधिष्ठान भेद	१२४३
अमपानरक्षाकल्पका व्याख्यान	१२०९	मूलविष	"
विषसे रक्षाका विधान	"	पत्र, पत्र आर पुष्प विष	१२४४
राजाकी सावधानी	१ ३०	त्वक्सार, नियांस, दुग्ध तथा धातुविष	"
योग्य वैद्यका विचार	"	कन्दविष	१२४५
रसोदका स्थान	१२३१	भावमिश्रणके मतानुसार नय जातिका विष	"
अध्यक्ष परिचारकादिक	"	और उनके नाम	"
विष देनेवालेकी परीक्षा	१२३२	विषोंक उपद्रव	"
विषके अधिष्ठान	१२३३	कन्दविषोंके उपद्रव	१२४६
विषयुक्त भोजनकी परीक्षा	"	निपमात्रके १० गुण	१२४७
परोसे हुए भोजनमें विषकी परीक्षा	१२३४	दस गुणोंके काय	"
प्रातमें विषपरीक्षा	१२३५	हान विष ( दूषीविष )	१२४८
आमाशयगत विषके लक्षण और उद्ग	"	दूषीविषयुक्तके लक्षण	"
पक्वाशयगत विषके लक्षण और यज्ञ	१२३६	दूषीविषकोपके पूरूप और उपद्रव	१२४९
वेद्य पदार्थोंमें विषपरीक्षा	"	दूषीविषकी निहन्ति	१२५०
शाकादिमें विषकी परीक्षा	"	स्वावरविषके ७ वेग	"
दूतीन आदिमें विषकी परीक्षा	१२३७	सात वेगोंके चिह्न	१२५१
अभ्यंगगत विषके लक्षण और यज्ञ	"	विषम यवागू	"
अनुलेपनगत विषके लक्षण और यज्ञ	१२३८	अजैय घृत	१ ५२
शिरोन्मथ और मुष्पन्नेपगत विष	"	विषारि नामक अमद	"
सर्पारियोंकी पीठपर विष	१२३९	विषोपद्रव यत्न	१२५३
नस्य, धूस और पुष्पोंमें विषके लक्षण, यत्न	"	<b>अथ द्वितीयोऽध्यायः २</b>	
वर्णनमें विषके लक्षण, यत्न	१२४०	जगमविषविधानीय अध्यायका व्याख्यान	१२५३
अंजनमें विषके लक्षण, यत्न	"	जगमविषके १६ अधिष्ठान	१२५४
विषम संज्ञित उपाय	१२४१	अधिष्ठान भेदमें विषके जीवोंके नाम	"
" " दगरा	१२४२	दिरद्विपितृजन्मजादिके अर्थ	१२५५
" " तीसरा	"	जन्मके शोषनका प्रकार	१२५६
रार्य विष मद्युक्त विष्य हुण्का यत्न	१२४३	विषस्थित पृष्ठी	"
<b>अथ द्वितीयोऽध्यायः २</b>		विषयुक्तपृष्ठी	१२५७
स्वावरविषविधानीय अध्यायका व्याख्यान	१२४३	विषम यत्न	"
विषके दो भेद	"	विषयुक्त धूस आर मद्यु तथा इनकी दृष्टि	१२५८
		विषकी उत्पत्ति	"





विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक.
उन्मत्त कुत्ते आदिम काटेहुएकी चिकित्सा	१२९८	कण्डूमकके काटेनेमें यत्न	१३१५
विषकोपकरणविधि	१२९९	विच्छुओंके भेद	१३१६
तत्रविधि	१३००	मन्दविष विच्छुओंके भेद और तद्दोषप्रव.	"
स्नान और वलिप्रदानके लिये मन्त्र	"	मध्यविष विच्छुकी आहृति और लक्षण	१३१७
<b>अथ सप्तमोऽध्यायः ७</b>		तीक्ष्णविष विच्छुकी आहृति लक्षणादि	"
हुडुभिस्वनीय अध्यायका व्याख्यान	१३०१	विच्छूके काटेके यत्न	१३१८
क्षारागद्विधि	"	क्षृताविषका वर्णन	१३१९
कल्याणघृतकी विधि	१३०३	क्षृताविषका प्राकटय	१३२०
अमृतायघृतकी विधि	"	क्षृताविषकी अवधि	"
महासुगन्धि अगदकी विधि	"	सात प्रकारका क्षृताविष	१३२१
महासुगन्धि अगदके गुण	१३०५	सात प्रकारके विषदशके लक्षण	"
विषातुरके पथ्यापथ्य	"	क्षृताओंकी उत्पत्ति	१३२२
<b>अथाष्टमोऽध्यायः ८.</b>		साध्य क्षृताओंके भेद	"
कीटकस्पका व्याख्यान	१३०६	असाध्य क्षृताओंके भेद और तद्दोषप्रव	१३२३
सर्पोंके गुक, विष्टा, मूत्र, देह, सडनेसे और	"	क्षृताओंके पृथक् २ दशके लक्षण और यत्न	"
अडोंसे सब कीटकीका उत्पन्न होना	"	त्रिमंढलाके दशके लक्षण और यत्न	"
अठारह प्रकारके वायवीय कृमि	"	चेताके दशके लक्षण और यत्न	१३२४
सर्वांस प्रकारके आग्नेय ( पौंसिक ) कृमि	१३०७	कपिलाके दशकेलक्षण और यत्न	"
तेरह प्रकारके सौम्य ( शैष्मिक ) कृमि	"	पीतिकाके	"
बारह प्रकारके प्राणहर ( सानिपातिक ) कृमि	१३०८	अल्पविषाके	"
नारके लक्षण	१३०९	मूत्रविषाके	"
एक जातिके कृमियोंके गण	१३१०	रक्तक्षृताके	"
कणभवे चार भेद	"	कसनाके	"
गोधरक ( गुहरे ) के पांच भेद	"	असाध्य क्षृताओंके यत्न, कृष्णक्षृता	१३२६
गोहृषे छ भेद	"	अमिवर्णाके दशके लक्षण और यत्न	"
शतपदी ( बनराज्जरा ) के आठ भेद	१३११	असाध्य क्षृताओंके दशके लक्षण	१३२७
विषयुक्त मंडकके आठ भेद	"	असाध्य क्षृताओंकी चिकित्साके लिये आशा	१३२८
विषमरादलक्षण	"	क्षृतादशका छेदनप्रकार	"
आर्द्रदुष्कादिदलक्षण	१३१२	पान और सेवना	१३२९
पिपीलिकाके छ भेद और तद्दलक्षण	"	उपगद्दार	१३३०
मक्षिकाके छ भेद	"	आयुर्वेदकी उत्तमता	१३३१
मशक ( मच्छर ) के पांच भेद तद्दलक्षण	१३१३	टाटाकारका पूर्विको	१३३२
असाध्य कृमि	"	<b>कल्पस्थान-परिशिष्ट भाग १.</b>	
मेलकके दाग, मूत्र, विष्टाके अगमें लगनेमें	"	तन्त्रान्तरोक्तविषोपयोगी विधि	१३३३
होन वाटे उपश्रुत	"	विषके गुण ( माषप्रकाशके मतानुसार )	"
वर्षादृष्टी चिकित्सा	१३१४	विषोंके सोपनका हेतु	१३३३
विच्छूके बान्नेमें यत्न	"	विरोधोपनिधि	"
विच्छूके बान्नेमें कृत्रिम उपचार	"	विषकी मात्रा	१३३४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
विषयकी विषयता	.. .. १११४	विषयकी विषयता	.. .. १११५
प्रतिविषयकी विषयता	.. ..	परिशिष्ट भाग २	
प्रतिविषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	.. ..	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५
विषयकी विषयता	१११५	विषयकी विषयता	१११५

इति मुश्रुतगद्दिनाकल्पस्यानविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

# अथ सुश्रुतसंहिता ।

सान्वयभाषाटीकासहिता ।

## चिकित्सितस्थानम् ४.

प्रथमोऽध्यायः १

अथातो द्विवर्णीयचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

शरीरक स्थानके अनंतर अब चिकित्सितस्थानका प्रारम्भ करते हैं उसमें प्रथम द्विवर्णीय अर्थात् दोनों प्रकारके शरीर और आगतुक वर्णोंकी चिकित्साका व्याख्यान करते हैं ॥

दो प्रकारके वर्ण ।

द्वौ वर्णौ भवत शरीर आगतुकश्चेति । तयो शरीरः पवनपित्तकफशोणितसन्निपातनिमित्तः । आगतुरपि पुरुषपशुपक्षिव्यालसरीसृपप्रपतनपीडनप्रहारान्निक्षारविपतीक्ष्णौषधशकलकपालशृङ्गचक्रेपुपरशुशक्तिकुन्ताद्यायुधाभिघातनिमित्तः ॥ १ ॥

वर्ण दो प्रकारके होते हैं एक शरीरक, दूसरे आगतुक । इनमेंसे जो वायु, पित्त, कफ, रुधिर तथा सन्निपातके कारण शरीरहीनसे उत्पन्न हो उसे शरीरक वर्ण कहते हैं । और जो मनुष्य, पशु ( बेल, घोड़े आदि ), पक्षी ( गिद्ध, शुक आदि ), व्याल ( सिंह, वृक आदि ) तथा सरीसृप ( सर्प, बिच्छू आदि ) के आघात-चोट लगने, फाटने आदिसे तथा उच्चपरसे गिरने, दमजाने और लफड़ा आदिके प्रहारसे तथा अग्निके जलने, क्षार ( तेजाव ) लगनेसे, विषसे स्पर्शादिसे तथा तीक्ष्ण औषध ( भिलावे आदि ) के लगनेसे, शकल अर्थात् बांसकी पच्चट, पाँचका टुकड़ा आदि

( पाक्य १ ) दो वर्णौ अधिरूपे वृष द्विवर्णीयम् । चिकित्सितं चिकित्साप्रतीकार । चरक स्तनमश्वत्थ आमुषगिशेन तथा रसादीनां चरक च । आदिशब्देन राश्वत्थो ग्राह्यः ॥

कपाट ( टेंबरा मोपरो ) सींग और चक्र ( पहियेकी रगत ), इष्ट ( तोर ) नया परशु ( कृन्हाटा ), शक्ति ( बरछी ) पुन ( तोमर ) आदि शस्त्रोंकी मोटा लपेटके कारणसे टसल हो उस आगंतुक वग कहन है ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणमामान्ये द्विस्फारणोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विद्वशीय  
इत्युच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र मामान्यतासे तुल्य होनेकी दो पाण्डासे उत्पन्न होने है उस प्रयो-  
जनसे "द्विद्वशीय" ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगतुक व्रणमे तान्त्रालिक विधि । -

सर्वस्मिन्नेवाऽऽगतुजणे तत्कालमेव क्षनोष्मंग प्रमृत्तन्योपेक्षनार्थं  
पित्तवच्छीतक्रियावधारणविधिर्विशेषः सधानार्थं च मधुघृतप्रयोग  
द्वयंतद्विस्फारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकालं तु दोषोपपन्नविशेषाच्छा-  
रीवत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगतुक व्रणोंमें ( आपात होनेकी ) तन्त्राल पायरी गरमीके वृद्धि-  
की शक्तिसे लिप पित्तकी शक्तिसे समान शीतल स्फारण अथवा लपेटा विधि-  
विधि है ( अर्थात् ताने आगतुक क्षतपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भौंगा  
कपड़ा लपेटना आदि दर्जित है ) और पायरी भरनेके लिये शीत और गरम  
उपयोग करने पर दोनों प्रकारके व्रणोंमें योगना करसकते हैं और आगतुक व्रण  
भी अधिक दिनरा होनासे ( पचनासे, मढ़नासे अच्छा न हो ) तो फिर दोषोपे-  
क्षानेकी भेदसे शास्त्रिक व्रणोंके समान विधिसे करनी चाहिये ॥ ३ ॥

प्रथमे दोष भेदः ।

दोषोपपन्नविशेष पुन समासित पंचदशप्रकारः प्रत्येकसामर्थ्या  
व्योक्तो व्रणप्रज्ञाधिकारे ॥ ४ ॥

व्रणके सामान्य विशेष लक्षण ।

तस्य लक्षणं द्विविधं सामान्य वैशेषिकश्च तत्र सामान्यं रुक् ।  
'व्रण' गात्रविचूर्णने । व्रणतीति व्रणः विशेषलक्षण पुनर्वातादि-  
लिंगविशेषः ॥ ५ ॥

व्रणमात्रके लक्षण दो प्रकारके है सामान्य ओर विशेष । जिसमें सामान्य लक्षण तो पीड़ा होनाही है । 'व्रण' धातु गात्रके विचूर्णन अर्थमें है उसमें व्रण शब्द (क्षत-वाचक) बनता है इसके विशेष लक्षण वात-पित्त-कफ—श्विर-धातपित्त-वात-कफ आदि भेदसे ( एक एक दोषके तथा दो दो दोष मिलकर और तीन तीन दोष मिलकर तथा चारों दोष मिलकर ) पद्वह प्रकारके अथवा शुद्ध व्रण महित १६ प्रकारके होते हैं जिन्हें जुदा जुदा वर्णन करते हैं ॥ ५ ॥

वातादिभेदसे १५ प्रकारके व्रणलक्षण ।

तत्र श्यावारुणाभस्तनुः शीतपिच्छलाल्पस्त्रावी रूक्षश्चटचटायन-  
शीलः स्फुरणागमतोदभेदवेदनावहुलो निर्मासश्चेति वातात् ॥ ६ ॥  
क्षिप्रज पीतनीलाभकिंशुकोदकाभोष्णस्त्रावी दाहपाकरागवि-  
कारी पीतपिडिकाजुष्टश्चेति पित्तात् ॥ ७ ॥

ठंडा, सुरस्त्री लिये, छोटा जो व्रण हो तथा ठंडा, गाढ़ा और थोड़ा जिसमें स्त्राव हो, म्त्रा हो, जिसमें चटचटतीसी उठे और स्फुरायमान हो, जिसमें जग मुड़े नहीं, जिसमें चीस और भेदन करनेकासा दुःख और पीड़ा अधिक हो तथा निर्मास हो उसे वातज व्रण जानो ॥ ६ ॥ जो शीघ्र उत्पन्न हो और बड़े, जिसमें पीलापन और नीलापन हों, जिसमेंसे केसके फूटके रंग जैसा गरम स्त्राव हो, जिसमें जलन और पकानेकीसी पीड़ा और राग ( चमक ) इत्यादि विकार हों और आसपासमें पीली २ फुत्सिया हों उसे पित्तज व्रण जानो ॥ ७ ॥

प्रततचंडकडूबहुल स्थूलो घनः मन्थशिरान्नायुजालावनत-  
कठिन पाडूवभासो मदवेदन शुरुशीतसाद्रपिच्छलान्नावी गुरु-  
श्चेति कफात् ॥ ८ ॥ प्रवालदलनिचयप्रकाश कृष्णस्फोटपिट्टि-  
काजालोपचितस्तुरगस्थानगध सवेदनो धुमायनशीलो रक्त-  
स्त्रावी पित्तलिंगश्चेति रक्तात् ॥ ९ ॥

जो फेरा हुआ हो, उंचा हो, जिसमें खान अशुभ हो, मोटा हो फटा हो, म्विचो हुई रंगों और नमोके जालमें व्याप्त हो, फटार हो, जिसमें पीलापन झलके, थोड़ी २

कषाण्ड ( टकरा सोपरी ), सौमि और चक्र ( पहियेकी रगट ), इषु ( लोह ) तथा परशु ( कुन्हाड़ा ), शक्ति ( बरडी ), कुत ( तोमर ) आदि शस्त्रोंकी चोट लगनेके कारणसे उत्पन्न हो उठे आगतुक व्रण कहने हैं ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणसामान्ये द्विकाम्णोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विप्रणीय  
उत्पुच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र सामान्यतामें तुल्य होनेपरभी दो कारणोंमें उत्पन्न होते हैं इस व्रणो-  
जनसे ' द्विप्रणीय ' ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगतुक व्रणमें तात्कालिक विधि ।

सर्वस्मिन्नेवाऽऽगतुनणे नत्कालमेव क्षतोर्मणः प्रसृतम्योपेक्षमाथ  
पित्तवच्छीतक्रियाधारणविधिविशेष संधानार्थं च मधुघृतप्रयोग  
इत्येतद्विकारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकाल तु दोषोपहतविशेषाच्चा  
रीरवत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगतुक व्रणोंमें ( आघात होतेही ) तत्काल पायसी गरमोंपैली-  
की शीतिके म्लिं पित्तकी शीतिके समान शीतल क्रियाका अन्वधारण करना विधि-  
विधि है ( अर्थात् ताजे आगतुक क्षतपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भौंगा  
कपड़ा लपेटना आदि उचित हैं ) और पायसे भरनेके म्लिं दाढ़न और घृतका  
उपयोग कर यह दोनों प्रकारके व्रणोंमें योजना परमकृत हैं और आगतुक व्रण  
भी अधिक दिनका होनेसे ( परगाने, महगमे अच्छा न हो ) तो फिर क्षयोद्दी  
उत्पन्नताके भेदमें शीतल व्रणों समान चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३ ॥

व्रणमें दोष भेद ।

दोषोपहतविशेष पुनः समासित पञ्चदशप्रकार प्रसरणनासर्प्या-  
पथोक्ती व्रणप्रभाविनारे शुद्धत्वात्सोऽश्वप्रकार इत्येके ॥ ४ ॥

दोषों ( वायु, पित्त, कफ और रुधिर इन चारों ) के उपपन्न ( उत्पन्न ) के जो  
पञ्चभेद प्रसरणकी सामर्थ्यमें होते हैं ये व्रणप्रभाविनारे ( सुसंव्यवस्थित इच्छामें  
आपघात ) में वर्णन हो चुके हैं इनमें अतिरिक्त सारे दोषोत्पन्नस्थित शुद्ध व्रण तथा  
सोऽश्वकी भेद कई आचार्य एक और मानते हैं ॥ ४ ॥

( सप्तम्य ) सुश्रुतसंहिता २१ में आपघातमें दोषोंके प्रसरणक्रममें १५ भेद  
कहे हैं जिसमें किसी दोषाधारण अन्वर्थ कहा है परन्तु निरिच्छित स्वातन्त्र्य  
शक्ति कारणसे यह अन्वर्थ ( भेद ) नहीं सिद्ध महामपञ्चविंशति ही

व्रणके सामान्य विशेष लक्षण ।

तस्य लक्षणं द्विविधं सामान्यं वैशेषिकश्च तत्र सामान्यं रुक् ।  
'व्रण' गात्रविचूर्णने । व्रणतीति व्रणः विशेषलक्षण पुनर्वातादि-  
लिंगविशेषः ॥ ५ ॥

व्रणमात्रके लक्षण दो प्रकारके हे सामान्य और विशेष । जिसमे सामान्य लक्षण  
तो पीड़ा होनाही है । 'व्रण' धातु गात्रके विचूर्णन अर्थमें है उससे व्रण शब्द (क्षत-  
वाचक) बनता है इसके विशेष लक्षण वात-पित्त-कफ—हरि-वातपित्त-  
वात-कफ आदि भेदसे ( एक एक दोषके तथा दो दो दोष मिलकर और तीन तीन  
दोष मिलकर तथा चारों दोष मिलकर ) पद्वह प्रकारके अथवा शुद्ध व्रण महित  
१६ प्रकारके होते है जिन्हें जुदा जुदा वर्णन करते है ॥ ५ ॥

वातादिभेदसे १५ प्रकारके व्रणलक्षण ।

तत्र श्यावारुणाभस्तनु शीतपिच्छलाल्पस्त्रावी रूक्षश्चटचटायन-  
शीलः स्फुरणागमतोदभेदवेदनावहुलो निर्मासश्चेति वातात् ॥ ६ ॥  
क्षिप्रजः पीतनीलाभकिंशुकोदकाभोष्णस्त्रावी दाहपाकरागवि-  
कारी पीतपिडिकाजुष्टश्चेति पित्तात् ॥ ७ ॥

ऊदा, सुरखी लिये, छोटा जो व्रण हो तथा ठंडा, गाढ़ा और थोड़ा जिसमे  
स्त्राव हो, रुखा हो, जिसमें चटचटीसी उठे और स्फुरायमान हो, जिसमें अग  
मुड़े नहीं, जिसमें चीम और भेदन करनेकासा दु ख और पीड़ा अधिक हो तथा  
निर्मास हो उसे वातज व्रण जानो ॥ ६ ॥ जो शीघ्र उत्पन्न हो और बड़े, जिसमें  
पीलापन और नीलापन हों, जिसमेंसे कसुके फूलके रंग जैसा गरम छाव हो,  
जिसमें जलन और पकानेकीसी पीड़ा और राग ( चमक ) इत्यादि विकार हों  
और आसपासमें पीली २ फुत्तिया हों उसे पित्तज व्रण जानो ॥ ७ ॥

प्रततचडकड्वहुल स्थूलो घन मन्थशिरान्नायुजालावतत-  
कठिन पांडवभासो मटवेदन शुहृशीतसाद्रपिच्छलास्त्रावी गुरु-  
श्चेति कफात् ॥ ८ ॥ प्रवालदलनिचयप्रकाश कृष्णस्फोटपिडि-  
काजालोपचितस्तुरगस्थानगः सवेदनो धूमायनशीलो रक्त-  
स्त्रावी पित्तलिंगश्चेति रक्तात् ॥ ९ ॥

जो फेला हुआ हो, उचा हो, जिसमें खाज अधिक हो, मोटा हो बड़ा हो, बिंबी  
हरे रंग और नमीर जालमें ग्यात हो, पट्टर हो, जिसमें पीलापन क्षयके, पीटी २



कपाल ( ठंरा छोपरी ), माँग और चक्र ( पहियेरी रगट ), दधु ( नाँ ) तथा परशु ( फुहाटा ), शक्ति ( चरडी ), पुन ( ताम्पर ) आदि शस्त्रोंकी मोटा जगहोंके कारणसे टलान हो उसे आगलुक प्रग कहते हैं ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणसामान्ये द्विकारणोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विप्रणीय इत्युच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र सामान्यतासे तुल्य होनेपर भी दो कारणोंसे उत्पन्न होना है इस प्रयोजनसे "द्विप्रणीय" ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगलुक व्रणमें तात्कालिक धिधि ।

सर्वस्मिन्नेवाऽऽगलुव्रणे तत्कालमेव क्षनोष्मेण प्रभृतस्योपेक्षनार्थं पित्तवच्छीनक्रियावधारणविधिविशेष सधानार्थं च नपुधृतप्रयोग इत्येतद्विकारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकालं तु दोषोपपन्नविशेषाच्छा-  
रीरवत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगलुक व्रणोंमें ( आघात होनेकी ) तत्काल पावरी गरमी फैलनेकी शक्तिये जिये पित्तकी शक्तिके समान शीतल क्रियाका अवधारण करना विशेष धिधिये है ( अर्थात् ताजे आगलुक धतपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भोला कपड़ा लपेटना आदि उचित है ) और पावरी भरनेके जिये शूल और घृनका उपयोग परं पर दोनों प्रकारके व्रणोंमें योग्यता परसकते हैं और आगलुक व्रण भी अधिक दिनका होनाय ( पचनाय, सहजमें अच्छा न हो ) तो फिर दापोरी उल्लेखताके भेदसे शरीरक व्रण समान निमित्ता परनी चाहिये ॥ ३ ॥

व्रणमें दोष भेद ।

दोषोपपन्नविशेष. पुन सर्वासत पंचदशप्रकार प्रत्येकसामर्थ्या-  
द्यथोक्तो व्रणप्रभेदाधिकारे द्रुत्तराज्योदशप्रकार इत्येके ॥ ४ ॥

दोषों ( पाण, पित्त, कफ और रुधिर इन चारों ) के उपपन्न ( उत्पन्न ) के जो पट्ट भेद प्रत्येककी सामर्थ्यसे होते हैं वे व्रणप्रभेदाधिकार ( सूक्ष्मताके दर्जाके आधार ) में वर्तन होयुक्त हैं इनके अधिकारिक सर्व दोषोपपन्नप्रकृत गुट प्रग एका सोलहवीं भेद परे आचार्य पच और मानते हैं ॥ ४ ॥

( पाठ्य ) सूत्रधार २१ के अनुसारमें दोषोंके प्रसरणक्रममें १० भेद कहे हैं जिसकी किसी टीकाकार ने उल्लेख नहीं किया है परन्तु जिसके स्थानके श्रुति पाठमें पद अन्वय ( संगत ) की दिष्ट मर्कटवत्परिणीत ही मान्य सिद्ध होती है ॥